९. जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ

-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

[अमृतलाल नागर जी से विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी की बातचीत]

तिवारी जी : नागर जी, मैं आपको आपके लेखन के आरंभ काल की ओर ले चलना चाहता हूँ । जिस समय आपने लिखना शुरू किया उस समय का साहित्यिक माहौल क्या था ? किन लोगों से प्रेरित होकर आपने लिखना शुरू किया और क्या आदर्श थे आपके सामने ?

नागर जी : लिखने से पहले तो मैंने पढ़ना शुरू किया था । आरंभ में कवियों को ही अधिक पढ़ता था । सनेही जी, अयोध्यासिंह उपाध्याय की कविताएँ ज्यादा पढ़ीं । छापे का अक्षर मेरा पहला मित्र था । घर में दो पत्रिकाएँ मँगाते थे मेरे पितामह । एक 'सरस्वती' और दूसरी 'गृहलक्ष्मी' । उस समय हमारे सामने प्रेमचंद का साहित्य था, कौशिक का था । आरंभ में बंकिम के उपन्यास पढ़े । शरतचंद्र को बाद में । प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का कहानी संग्रह 'देशी और विलायती' १९३० के आसपास पढ़ा । उपन्यासों में बंकिम के उपन्यास १९३० में ही पढ़ डाले । 'आनंदमठ', 'देवी चौधरानी' और एक राजस्थानी थीम पर लिखा हुआ उपन्यास, उसी समय पढ़ा था ।

तिवारी जी : क्या यही लेखक आपके लेखन के आदर्श रहे ?

नागर जी : नहीं, कोई आदर्श नहीं । केवल आनंद था पढ़ने का । सबसे पहले कविता फूटी साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय १९२८-१९२९ में । लाठीचार्ज हुआ था । इस अनुभव से ही पहली कविता फूटी-'कब लौं कहौं लाठी खाय!' इसे ही लेखन का आरंभ मानिए ।

तिवारी जी : इस घटना के बाद आप राजनीति की ओर क्यों नहीं गए ?

नागर जी : नहीं गया क्योंकि पिता जी सरकारी कर्मचारी थे । १९२९ के बाद मेरी रुचि बढ़ी-पढ़ने में भी और सामाजिक कार्यों में भी । लेकिन मेरी पहली कहानी छपी १९३३ में 'अपशकुन' । तुम्हारे गोरखपुर के मन्नन द्विवेदी लिख रहे थे उन दिनों । चंडीप्रसाद हृदयेश थे जिनकी लेखन शैली ने मुझे बहुत प्रभावित किया ।

परिचय

जन्म : १९४१, देवरिया (उ.प्र.)
परिचय : विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी हिंदी जगत के जाने-माने कवि, लेखक, आलोचक एवं संपादक हैं। आप देश, काल और वातावरण के प्रति सजग और संवेदनशील रचनाकार हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'फिर भी कुछ रह जाएगा' (कविता संग्रह), 'अज्ञेय पत्रावली' (निबंध), 'अंतहीन आकाश' (यात्रा), 'अमेरिका और युरोप में एक भारतीय बन' (यात्रा संस्मरण), 'अस्ति और भवति' (आत्मकथा), 'बातचीत' (साक्षात्कार संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत साक्षात्कार में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी ने नागर जी से तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों, लेखकों आदि के बारे में अनेक प्रश्न पूछे हैं । इन सभी का जीवन एवं लेखन पर कितना और किस तरह का प्रभाव पड़ा, इसे साक्षात्कार के माध्यम से जानने का प्रयास किया गया है ।

तिवारी जी : क्या उन दिनों आपपर गांधीजी के व्यक्तित्व का भी कुछ प्रभाव पड़ा ?

नागर जी : हाँ, निश्चित रूप से पड़ा । पिता जी ने आंदोलनों में भाग लेने से रोका । वह रोकना ही मेरे लेखन के लिए अच्छा हुआ ।

तिवारी जी : आपके लेखन में गरीबों के प्रति जो करुणा है वह किससे प्रभावित है ?

नागर जी : वह तो अपने समाज से ही उभरी थी । मेरी पहली कहानी 'प्रायश्चित' इसका प्रमाण है । हमारे पारिवारिक संस्कार भी थे । मेरे पिता जी में एक अद्‌भुत गुण था । वे किसी के दुख-दर्द में तुरंत पहुँचते थे । इसने मुझे बहुत प्रभावित किया ।

तिवारी जी : उस समय तो क्रांतिकारी आंदोलन भी हो रहे थे । क्या उनका भी आपपर कुछ प्रभाव पड़ा ?

नागर जी : उसी से तो पिता जी ने डाँटा और रोका । काकोरी बमकांड हो चुका था । १९२१ से आंदोलन तेज हो गए थे ।

तिवारी जी : क्या सामाजिक आंदोलनों, जैसे आर्य समाज का भी आपपर कुछ प्रभाव पड़ा ?

नागर जी : आरंभिक असर है थोड़ा जरूर । मेरे पिता जी में एक अच्छी बात थी कि उन्होंने मुझे सामाजिक आंदोलनों में जाने से कभी नहीं रोका । जवाहरलाल नेहरू से मेरी भेंट १९३३ में हुई । उनकी माँ मेडिकल कॉलेज में दाखिल थीं और उसी समय मेरा छोटा भाई भी वहाँ दाखिल था । नेहरू जी जेल में थे । उनकी माँ के पास कुछ कश्मीरी लोगों को छोड़कर कोई आता-जाता नहीं था । मैं उनकी माता जी के पास रोज जाता था । पंडित जी जब जेल से छूटे तो मेरी उनसे वहीं भेंट हुई जो प्रायः होती रहती थी । उनसे खूब बातें होती थीं- हर तरह की ।

तिवारी जी : आपका पहला उपन्यास कौन-सा है ?

नागर जी : पहला उपन्यास लिखा १९४४ में 'महाकाल', जो छपा १९४६ में । बंगाल से लौटकर इसे लिखा था ।

तिवारी जी : क्या यही बाद में 'भूख' नाम से प्रकाशित हुआ ।

नागर जी : हाँ ।

तिवारी जी : नागर जी, आप अपने समय के और कौन-कौन से लेखकों के संपर्क-प्रभाव में रहे ?

किसी बुजुर्ग से स्वतंत्रतापूर्व भारत की विस्तृत जानकारी सुनिए और मित्रों को सुनाइए ।

नागर जी : जगन्नाथदास रत्नाकर, गोपाल राय गहमरी, प्रेमचंद, किशोरी लाल गोस्वामी, लक्ष्मीधर वाजपेयी आदि के नाम याद आते हैं । माधव शुक्ल हमारे यहाँ आते थे । वे आजानुबाहु थे, ढीला कुरता पहनते थे और कुरते की जेब में जलियाँवाला बाग की खून सनी मिट्‌टी हमेशा रखे रहते थे । १९३१ से ३७ तक मैं प्रतिवर्ष कोलकाता जाकर शरतचंद्र से मिलता रहा, उनके गाँव भी गया ।

तिवारी जी : पुराने साहित्यकारों में आप किसको अपना आदर्श मानते हैं ?

नागर जी : तुलसीदास को तो मुझे घुट्‌टी में पिलाया गया है । बाबा, शाम को नित्य प्रति 'रामचरितमानस' मुझसे पढ़वाकर सुनते थे । श्लोक जबरदस्ती याद करवाते थे ।

तिवारी जी : नागर जी, आपने 'खंजन नयन' में सूरदास के चमत्कारों का बहुत विस्तार से वर्णन किया है । क्या इनपर आपका विश्वास है ?

नागर जी : नेत्रहीनों के चमत्कार हमने बहुत देखे हैं । उनकी भविष्यवाणियाँ कभी-कभी बहुत सच होती हैं । सूरपंचशती के अवसर पर काफी विवाद चला था कि सूर जन्मांध थे या नहीं । सवाल यह है कि देखता कौन है ? आँख या मन ? आँख माध्यम है, देखने वाला मन है ।

तिवारी जी : आपने क्या कभी अपने लिखने की सार्थकता की परख की है ?

नागर जी : हाँ, मेरे पास बहुत से पत्र आते हैं । मेरे उपन्यासों के बारे में, खास तौर से जिनसे पाठकीय प्रतिक्रियाओं का पता चलता है ।

तिवारी जी : नागर जी, आपने भ्रमण तो काफी किया है...

नागर जी : हाँ, पूरे अखंड भारतवर्ष का । पेशावर से कन्याकुमारी तक । बंगाल से कश्मीर तक । इन यात्राओं का यह लाभ हुआ कि मैंने कैरेक्टर (चरित्र) बहुत देखे और उनके मनोविज्ञान को भी समझने का मौका मिला ।

तिवारी जी : अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ?

नागर जी : अगर दिल से पूछो तो एक ही आदमी । उसे बहुत प्यार करता हूँ । वह है रामविलास शर्मा । प्रभातकुमार मुखोपाध्याय का संग्रह 'देशी और विलायती' अगर मिल जाए तो फिर पढ़ना चाहूँगा । बदलते हुए भारतीय समाज

लेखनीय

किसी खिलाड़ी का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नों की सूची बनाइए ।

पठनीय

प्रसिद्‌ध व्यक्तियों के भाषण पढ़िए और चर्चा कीजिए ।

के सुंदर चित्र हैं उसकी कहानियों में । टॉल्स्टॉय और चेखव की रचनाएँ भी मुझे प्रिय हैं ।

तिवारी जी : आपने तो पत्रों का भी बहुत संकलन किया है ?

नागर जी : हाँ, बहुत । पत्रों का संग्रह भी काफी है, लेकिन वह व्यवस्थित नहीं है । मैंने प्रत्येक जाति के रीति-रिवाज भी इकट्ठे किए हैं । इसके लिए घूमना बहुत पड़ा है । बड़े-बूढ़ों से सुनकर भी बहुत कुछ प्राप्त किया है । 'गदर के फूल' के लिए मुझे बहुत लोगों से मिलना-जुलना पड़ा ।

तिवारी जी : आपने अपने उपन्यासों के लिए फील्डवर्क बहुत किया है ।

नागर जी : हाँ, बहुत करना पड़ा है । 'नाच्यो बहुत गोपाल' के लिए सफाई कर्मियों की बस्तियों में जाना पड़ा। उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा ।

तिवारी जी : नागर जी, क्या आप मन और प्राण को अलग-अलग मानते हैं ?

नागर जी : हाँ, प्राण को मन से अलग करना पड़ेगा । मन की गति आगे तक है । प्राण को वहाँ तक खींचना पड़ता है । मन एक ऐसा निर्मल जल है जिससे जीवन के संस्कार रँगते हैं । मन, प्राण से ही सधता है ।

तिवारी जी : सूर में आपने मन को ही पकड़ा है ।

नागर जी : हाँ, सूर ने एक जगह लिखा है-'मैं दसों दिशाओं में देख लेता हूँ ।' जब पूरी प्राणशक्ति एक जगह केंद्रित होगी तो 'इंट्यूटिव आई' बनाएगी ।

तिवारी जी : नागर जी, हम लोगों ने आपका बहुत समय लिया, बल्कि आपकी उम्र और स्वास्थ्य का भी लिहाज नहीं किया ।

नागर जी : स्वास्थ्य ठीक है मेरा । पत्नी की मृत्यु के बाद एक टूटन आ गई थी, लेकिन फिर मैंने सोचा कि लिखने के सिवा और चारा क्या है । तुम लोग यह मनाओ कि जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ ।

('एक नाव के यात्री' से)

— ० —

संभाषणीय

'आज के समय में पत्र लेखन की सार्थकता' पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

शब्द संसार

बहिष्कार करना क्रि.(सं.) = त्याग करना, निकाल देना
भ्रमण पुं.सं.(सं.) = घूमना, फिरना
शैली स्त्री.सं.(सं.) = प्रणाली, रीति, तरीका
संकलन पुं.सं.(सं.) = संग्रह

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

अमृतलाल नागर जी के साहित्य सृजन में सहायक	लेखक	१.	२.
	पत्रिकाएँ	१.	२.

(२) उत्तर लिखिए :–

१. नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित करने वाला अनुभव - - - - - - - - - - - - -

२. नागर जी अपने पिता जी के इस गुण से प्रभावित थे - - - - - - - - - - - - - - - - - -

(३) कोष्ठक में दी गई नागर जी की साहित्य कृतियों का वर्गीकरण कीजिए :

[कब लौं कहौं लाठी खाय, खंजन नयन, अपशकुन, नाच्यो बहुत गोपाल, महाकाल, प्रायश्चित, गदर के फूल]

कहानी	उपन्यास	कविता	अन्य

(४) कृति पूर्ण कीजिए :

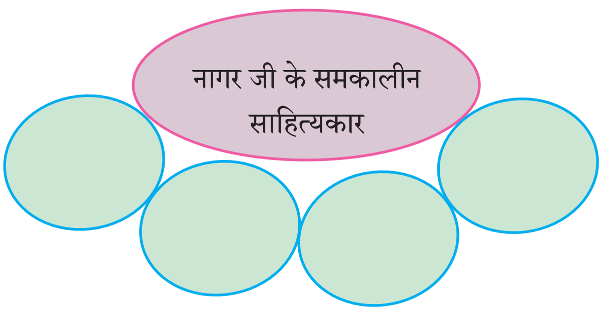

(५) लिखिए :

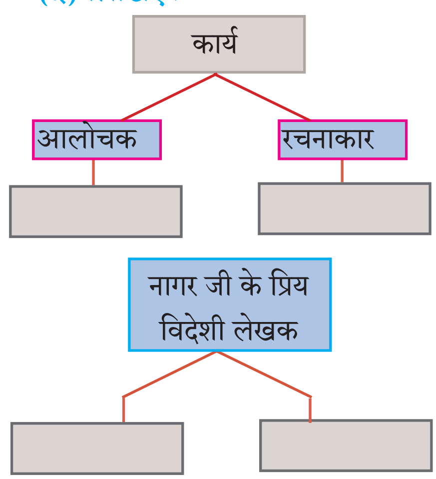

(६) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

१. नागर जी के प्रिय लेखक –

२. नागर जी के प्रिय आलोचक –

३. अपनी इस रचना के लिए नागर जी को बहुत लोगों से मिलना पड़ा –

४. नागर जी का पहला उपन्यास –

(७) लिखिए :

(अ) तद्धित शब्दों का मूल शब्द :

१. साहित्यिक = ____________

२. विलायती = ____________

(ब) कृदंत शब्दों का मूल शब्द :

१. खिंचाव = ____________

२. लिखावट = ____________

(८) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

'अ' रचना	उत्तर	'ब' रचनाकार
१. देसी और विलायती	१ ____________	अमृतलाल नागर
२. अपशकुन	२ ____________	तुलसीदास
३. आनंद मठ	३ ____________	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय
४. रामचरितमानस	४ ____________	बंकिमचंद्र चटर्जी
		सूरदास

अभिव्यक्ति

'ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का साधन : वाचन' पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में आई हुई मुख्य और सहायक क्रियाओं को रेखांकित करके दी हुई तालिका में लिखिए :

- उनके रीति-रिवाजों का अध्ययन करना पड़ा ।
- माता-पिता का यह रंग देखकर तो वे बूढ़ी काकी को और सताने लगे ।
- उसकी ननद रूठ गई ।
- वे हड़बड़ा उठे ।
- वे पुस्तक पकड़े न रख सके ।
- उन्होंने पुस्तक लौटा दी ।
- समुद्र स्याह और भयावह दीखने लगा ।
- मैं गोवा को पूरी तरह नहीं समझ पाया ।
- काकी घटनास्थल पर आ पहुँची ।
- अवश्य ही लोग खा-पीकर चले गए ।

मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया
१. ----------	----------
२. ----------	----------
३. ----------	----------
४. ----------	----------
५. ----------	----------
६. ----------	----------
७. ----------	----------
८. ----------	----------
९. ----------	----------
१०. ----------	----------

(२) पाठों में प्रयुक्त सहायक क्रियाओंवाले दस वाक्य ढूँढ़कर मुख्य और सहायक क्रियाएँ चुनकर लिखिए ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए तथा संबंधित कारक और कारक चिह्न तालिका में वाक्य के सामने लिखिए :

अ.क्र.	वाक्य	कारक	कारक चिह्न
१.	चाची अपने कमरे ---- निकल रही थी ।	-------------	-------------
२.	मैं बंडल ---- खोलकर देखने लगा ।	-------------	-------------
३.	आवाज ---- मेरा ध्यान बँटाया ।	-------------	-------------
४.	हमारे शहर ---- एक कवि हैं ।	-------------	-------------
५.	कितने दिनों ---- छुट्टियाँ हैं ?	-------------	-------------
६.	मानू रेल ---- ससुराल चली गई ।	-------------	-------------
७.	उन्हें पुस्तक ले आने ---- कहा ।	-------------	-------------
८.	पर्यटन ---- बहुत ही आनंद मिला ।	-------------	-------------
९.	शरीर को कुछ समय ---- विश्राम मिल जाता है ।	-------------	-------------
१०.	बस ---- गोवा घूमने की योजना बनाई ।	-------------	-------------
११.	बुद्धिराम स्वभाव ---- सज्जन थे ।	-------------	-------------
१२.	रूपा घटना स्थल ---- आ पहुँची ।	-------------	-------------
१३.	---- यह बुढ़िया कौन है ?	-------------	-------------

(४) पाठ में प्रयुक्त विभिन्न कारकों का एक-एक वाक्य छाँटकर उनसे कारक और कारक चिह्न चुनकर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

(१) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर इसपर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

विख्यात गणितज्ञ सी.वी. रमण ने छात्रावस्था में ही विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का देश में ही नहीं विदेशों में भी जमा लिया था।

रमन का एक साथी छात्र ध्वनि के संबंध में कुछ प्रयोग कर रहा था । उसे कुछ कठिनाइयाँ प्रतीत हुईं, संदेह हुए । वह अपने अध्यापक जोन्स साहब के पास गया परंतु वह भी उसका संदेह निवारण न कर सके । रमण को पता चला तो उन्होंने उस समस्या का अध्ययन-मनन किया और इस संबंध में उस समय के प्रसिद्ध लॉर्ड रेले के निबंध पढ़े और उस समस्या का एक नया ही हल खोज निकाला । यह हल पहले हल से सरल और अच्छा था । लॉर्ड रेले को इस बात का पता चला तो उन्होंने रमण की प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की । अध्यापक जोन्स भी प्रसन्न हुए और उन्होंने रमण से इस प्रयोग के संबंध में लेख लिखने को कहा । रमण ने लेख लिखकर श्री जोन्स को दिया, पर जोन्स उसे जल्दी लौटा न सके । कारण संभवतः यह था कि वह उसे पूरी तरह आत्मसात न कर सके ।

प्रश्न : १. ______________________

२. ______________________

३. ______________________

४. ______________________

५. ______________________

(२) 'अंतरजाल' से 'मेक इन इंडिया' योजना संबंधी जानकारी प्राप्त करके इसे बढ़ावा देने हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए :-

मुद्दे :

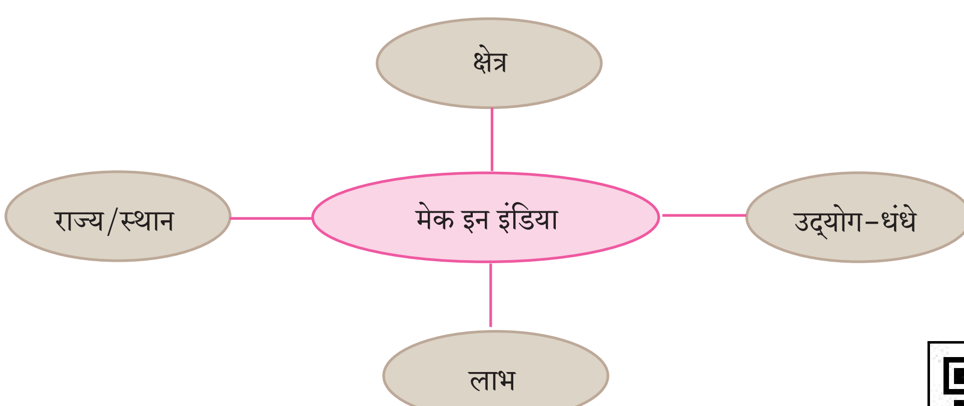

C4IDHY